साहित्य क्या है ?

साहित्य क्या है ? या प्रश्न अपने आप में काफी बड़ा है और हम यह कह सकते हैं कि इसका स्वरूप विशालकाय वट वृक्ष से किसी भी मायने में कम नहीं है। फिर भी कई विद्वानों ने इसे अपने शब्दों में एक प्रश्नोत्तर के रूप में इस प्रकारस्वीकार किया है जो वस्तु बहुत अधिक मूल्य और महत्व की होती है उसे हम साहित्य कहेंगे। दूसरे शब्दों में दोषों से रहित, गुण–युक्त और साधारणालंकार सहित परन्तु कहीं–कहीं अलंकार रहित शब्द और अर्थ दोनों की समष्टि साहित्य है। फिर भी कई लोगों ने भिन्न–भिन्न दृष्टिकोनों से इसे देखा है – बल्कि हम यह कहें कि लोगों ने इस पर गहन चिन्तन मनन किया है। लोगों की दृष्टिकोण से इसके लक्षण भी भिन्न–भिन्न हैं।

इसलिए साहित्य की उत्पति पर विचार कर लेना बेहतर प्रश्नोत्तर को प्रकट करती है। हिन्दी साहित्य एवं उसके अंग के लेखक के अनुसार – "हितेन सह सहित्य और सहितस्य श्रुतिकांत शास्त्री भावः साहित्यम्।"

साहित्य में सह या साथ का भाव प्रकट करने वाला। अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर यदि हम रचनात्मक कार्य करते हैं तो इस प्रकार के पद सृजन की कला से ही साहित्य कहलाता है। साहित्य का अंग्रेजी शब्द Literature है जो Letters शब्द से बना है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि अकथ्य को कथ्य रूप में प्रकट करना ही साहित्य है।

साहित्य को व़ाड.मय का एक अंग मानना हमारी मजबूरी है। जो अपने आप में सरस, सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण है जो साहित्य के अंगांश है क्योंकि यदि वाड.मय को मुद्रित कर दिया जाए तो यह साहित्य के रूप में उभर कर सामने आता है। साहित्य को दूसरे शब्दों में भी देख सकते हैं जिसमें सिर्फ एक किताब जो शिल्प एवं अभिव्यंजनात्मक विषय का वाहक है। इसमें सिर्फ सौन्दर्यात्मक मूल्य को ही मानदंड बनाया गया है। जो एक तर्क विहीन स्थिति को उभारती है।

साधारण रूप में साहित्य की तुलना स्वयं के शरीर से कर सकते हैं क्योंकि जिस प्रकार से इस शरीर के कई अंग हैं और एक साथ मिलकर इस शरीर को रूप प्रदान करते हैं और सभी के अपने–अपने कार्य एवं महत्व हैं। साहित्य के भी कई विधाएँ (अंग) हैं जैसे – उपन्यास, कहानी, कविता इत्यादि और किस प्रकार हमारे इस शरीर का मूल ईश्वर है। जिसने हमें सृजा तथा यह रूप दिया। ठीक उसी प्रकार वाड.मय साहित्य का मूल है और साहित्य इसका एक अंश है।

Scanned with CamScanner

कई विचारों पर मंथन करने के बाद भी साहित्य का सही–सही मूल्यांकन कर पाना कठिन लगता है। फिर भी इसके लक्षणों पर विचार करने से थोड़ी सी उलझनें कम होती प्रतीत होती है। इसके लक्षण इस प्रकार हैं :–

(1) साहित्य जीवन का मुखारित रूप है।

(2) साहित्य जीवन के महासागर से उठी हुई उच्चतम तरंग है।

(3) साहित्य समाज का मुकूर है।

(4) साहित्य संसार के सर्वोत्तम मस्तिष्कों एवं परम संवेदनशील हृदयों के चिंतन एवं अनुभूतियों का वाणी रूप में प्रकाशन है।

(5) साहित्य किसी जाति के जीवन के उत्थान पतन का लेखा है।

(6) अकथ्य का कथ्य रूप में प्रकट होना।

Scanned with CamScanner